अग्रवालों की उत्पत्ति

श्रीः

अग्रवालोंकी उत्पत्ति



भारतभूषण भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र
विरचित

काशीनिवासी बाबू राधाकृष्ण-
दासकी सम्मतिसे



संस्करण : दिसम्बर २००४, सम्वत् २०६१

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

समर्पण



प्रिय अग्रवाल भाइयो !

मैं अनेकशः धन्यवाद बाबू राधाकृष्णजी काशी-निवासीको देताहूं कि, जिन्होंने मेरी अभिलाषा पूर्ण करनेके लिये यह पुस्तक मुद्रणार्थं कृपा की। अब हे बन्धुगण ! यह स्ववंशहितकारिणी पुस्तक आप लोगोंके समक्ष अमूल्य उपस्थित की जाती है, कृपा-कर स्वीकार कीजिये और जहां पर कोई त्रुटि दृष्टि-गत हो तो तत्काल सूचित कीजिये कि, जिससे पुनरावृत्तिमें यह पुस्तक उन दोषोंसे वर्जित कर-दीजावे ॥

निवेदन



यह उत्पत्ति पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रने सं० १९२८ में बनाई थी. तबसे इसके कई संस्करण छपकर इस प्रांतमें प्रसिद्ध हो चुके. परन्तु देशमें इसका प्रचार कम देखकर इस अभावको दूर करनेकी इच्छा वैश्यकूलभूषण गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीने मुझसे प्रगट की. मैंने सहर्ष और धन्यवादपूर्वक इस ग्रन्थको छापनेका अधिकार अपने मित्र बाबू रामदीनसिंहकी अनुमतिसे इनको दिया. आशा है कि, इसके प्रचारसे हमारे भाई लोक अपने पूर्व पुरुषोंके इतिवृत्तज्ञान होकर अपने कुल धर्म और मर्यादाके पालनमें तत्पर होंगे.

काशी आषाढ कृष्ण १	निवेदक-
सं० १९५०.	राधाकृष्णदास.

भूमिका



यह "वंशावली" परम्पराकी जनश्रुति और प्राचीन लेखोंसे संगृहीत हुई है परन्तु इसका विशेष भाग भविष्यपुराणके उत्तर भागके श्रीमहालक्ष्मी व्रतकी कथासे लिया गया है। इससे वैश्योंमें मुख्य अगरवालों की उत्पत्ति लिखी है। इस बातका महाराजा जयसिंहके समयमें निर्णय हुआ था कि; वैश्योंमें मुख्य अगरवालेही हैं इन अगरवालोंका संक्षेप वृत्तान्त इस स्थान पर लिखा जाताहै इनका मुख्यदेश पश्चिमोत्तर प्रान्त है और इनकी बोली स्त्री और पुरुष सबकी खड़ी बोली अर्थात् उर्दू है इनके पुरोहित गौड ब्राह्मण हैं और इनका व्यवहार सीधा और प्रायः सच्चा होता है और इस जातिमें एक विशेषता यह है कि, इनमें कोई ऊंचे नीचे नहीं होते और न किसीकी कोई अल्ल (उपाधि) होती है बनारस और मिरजापुरमें तो पुरवियोंका नाम भी सुना जाता है जो देशमें पूँछो कि, तुम पुरविये हो कि, पछाहिं? तो वे लोग बडा आश्चर्य करते हैं, और कहते हैं कि, पुरविये शब्दका क्या अर्थ है. बनारसके पछाहीं लोगोंमेंभी ठीक अगरवालोंकी रीतियां नहीं मिलतीं और उनकी बोलीभी वैसी नहीं है केवल जो

घर दिल्लीवाले लोगोंके हैं उनमें वे बातें हैं। इन लोगोंमें जैसा विवाहादिकमें उत्सव होता है. वैसाही मरनेमें बरसों दुःख भी करते हैं। परन्तु जब बूढा मरता है तब तो विवाहसेभी धूमधाम विशेष कर देतेहैं.

देश में तो जामा पगड़ी पहनके सब दाल भात खाते हैं पर इधर यह व्यवहार नहीं करते और केवल पूरी खानेमें जातिका साथ देते हैं। एक बात यहभी इस जातिमें उत्तम है कि, अगरवालोंमें मांस और मदिराकी चाल कहीं नहीं है.पर हुक्का इनके पुरोहित और ये दोनों पीते हैं. यों जो लोग नेमी हों वे न पियें पर जातिकी चाल है। विवाह के समय इनका बहुत व्यय करना सबमें प्रसिद्ध है और इसी विपत्ति से कई घर बिगड गये पर यह रीति छोडते नहीं। इनमें कुछ लोग जैनी भी होते हैं और देशमें सब जनेऊ पहिरते हैं पर इधर पूरब में कोई कोई नहीं भी पहिरते, इनके पुरुषोंका पहिरावा पगडी पायजामा या धोती और अङ्गा है और स्त्रियोंका पहिराव ओढ़ना घांघरा या छोटेपन में सुथना है। और दशों संस्कार होने की चाल इनमें अबतक मिलती है । पूरबियों के अतिरिक्त मारवाडी अगरवाले भी होते हैं पर इनका

ठीक पता नहीं मिलता कि, कबसे और कहां से हैं। जैसे पछाहीं अगरवालों की चाल खत्रियोंसे मिलती है वैसेही इन मारवाडियों की महेशरियों से मिलती है पर पुरबियोंकी चाल तो इन दोनों से विलक्षण है।

अगरवालों की उत्पत्ति की भूमिका में यह बात लिखनी भी आनन्द देनेवाली होगी कि, श्रीनन्दरायजी जिनके घर साक्षात् श्रीकृष्णचन्द्र प्रगट हुए वैश्यही थे और यह बात श्रीमद्भागवतादि ग्रंथोंसेभी निश्चय की गई है, जो हो इस कुलमें सर्वदासे लोग बडे धनवान् और उदार होते आये पर इन दिनों वै बातें जाती रही थीं, मुगलोंके समयसे इनकी वृद्धि फिर हुई और अब तक होती जातीहै।

मैंने इस छोटेसे ग्रन्थमें संक्षेपसे इनकी उत्पत्ति लिखी है, निश्चय है, कि इसे पढके वे लोग अपनी कुलपरम्परा जानेंगे और मुझे भी अपने हीन और छोटे भाइयोंमें स्मरण रक्खेंगे।

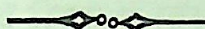
वैशाख शुद्ध ९ सं० १९२८
काशी.

श्रीहरिश्चन्द्र.

श्रीः

वैश्यवंशावतंसाय भगवते श्रीकृष्णचन्द्राय नमः।

अग्रवालोंकी उत्पत्ति



दोहा

विमल वैश्यवंशावली, कुमुदवनी हित चन्द।
जयजय गोकुल गोप गो, गोपीपति नँदनन्द ॥१॥

भगवान्‌ने मुखसे ब्राह्मण और भुजासे क्षत्रिय और जांघसे वैश्य और चरणोंसे शूद्रोंको बनाया. उसमें वैश्यको चार कर्म्मका अधिकार दिया. पहिला खेती, दूसरा गऊकी रक्षा, तीसरा व्यापार और चौथा व्याज जैसे वेद और यज्ञादिक का स्वामी ब्राह्मण और राज्य तथा युद्धका स्वामी क्षत्रिका वैसेही धनका स्वामी वैश्य है और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनोंकी द्विज संज्ञा है और तीनों वर्ण वेदकर्मके अधिकारी हैं। पहिला मनुष्य जो वैश्यों में हुआ उसका नाम धनपाल था जिसे ब्राह्मणों ने प्रतापनगरमें राज्यपर बिठाकर धन का अधिकारी बनाया, उसके यहां आठ पुत्र और एक कन्या हुई। उस कन्या का नाम मुकुटा था और वह याज्ञवल्क्य ऋषिसे व्याही गई। उन आठ पुत्रोंके ये

नाम थे, शिव, नल, अनिल, नन्द, कुन्द, कुमुद, वल्लभ और शेखर। इन पुत्रोंके अश्वविद्या शालिहोत्र के आचार्य विशाल राजा ने अपनी आठ बेटियां व्याहदी थीं। उन कन्याओं के ये नाम थे और यही वैश्य लोगोंकी मातृका हैं। पद्मावती, मालती, कान्ति, शुभा, भव्या, भवा, रजा और सुन्दरी। इनका व्याह नामके क्रम से हुआ। इन आठ पुत्रों में नल नामा पुत्र योगी और दिगम्बर होकर वनमें चला गया और सात पुत्रों ने सात द्वीप का अधिकार पाया और पृथ्वी में इनका वंश फैलगया। जम्बूद्वीपमें विश्य नामा राजा हुआ जो आठ पुत्रों में शिवके कुल में था और उस विश्य के वैश्य हुआ उसके वंश में एक सुदर्शन राजा हुआ जिसके दो स्त्रियां थीं जिनके नाम सेवती और नालिनी थे. उसका पुत्र धुरन्धुर हुआ इसी धुरन्धुरका पंडपोता समाधि नामा वैश्य हुआ था। इसी समाधिके वंशमें मोहनदास बडा प्रसिद्ध हुआ, जिसने कावेरी के तट पर श्रीरंगनाथजी के बहुत से मन्दिर बनाये. इसका पडपोता नेमिनाथ हुआ जिसने नेपाल बसाया और उसका पुत्र वृन्द हुआ जिस ने श्रीवृन्दावनमें यज्ञ करके वृन्दा देवीकी मूर्ति स्थापनकी। इस

वंश में गुर्जुर बहुत प्रसिद्ध हुआ जिसके नामसे गुजरातका देश बसा है। इसके वंक्षमें हीर नामा एक राजा हुआ जिसके रंग इत्यादिक सौ पुत्र थे, जिनमें रंगने तो राज्य पाया और सब बुरे कर्मोंसे शूद्र होगये और तपके बलसे फिर इन लोगोंने वंश चलाये-जिनके वंशके लोग वैश्य हुए पर उनके कर्म्म शूद्रोंकेसे थे. रंगका पुत्र विशोक हुआ उसके पुत्रका नाम मधु और उसका पुत्र महीधर हुआ। महीधरने श्रीमहादेवजीको प्रसन्न करके बहुतसे वर पाये--इसके वंशमें सब लोग व्यौहार चतुर और सब धन और पुत्रसे सुखी थे।

इसी वंशमें वल्लभ नामा एक राजा हुआ और उसके घरमें बडे प्रतापी अग्र राजा उत्पन्न हुआ इसको अग्रनाथ और अग्रसेनभी कहते थे। यह बडा प्रतापी था। इसने दक्षिण देशमें प्रतापनगर को अपनी राजधानी बनाया। यह नगर धन और रत्न और गऊसे पूर्ण था। यह ऐसा प्रतापी था कि, इन्द्रनेभी उससे मित्रता कीथी। एक नागलोकसे नागोंका कुमुद नाम राजा अपनी माधवी कन्याको लेकर भूलोकमें आया और उस कन्याको देखकर इन्द्र

मोहित होगया और नागराजसे वह कन्या मांगी पर नागराजने इंद्रको वह कन्या नहीं दी और उसका बिवाह राजा अग्रसे कर दिया। यही माधवी कन्या सब अग्रवालोंकी जननी है. और इसी नातेसे हम लोग सर्पोंको अब तक मामा कहते हैं।

इन्द्रने इस बातसे बडा क्रोध किया और राजा अग्र से वैर मान कर कई वर्ष उनकी राजधानीपर जल नहीं बरसाया और अग्रराजासे बडा युद्ध किया तब भगवान् ब्रह्मदेवने दोनोंको युद्धसे रोका इससे राजा अपनी राजधानीमें फिर आया और राज्य अपनी स्त्रीको सौंपके आप तीर्थोंमें घूमने चलागया और सब तीर्थोंमें फिरकर महालक्ष्मीजीकी उपासना की और काशीमें आकर कपिलधारा तीर्थपर महादेवजीका बडा यज्ञ करके बहुतसा दान किया. तब श्रीमहादेवजी प्रसन्न होकर प्रगट हुए और कहा कि, वर मांगो तब राजाने कहा कि, मैं केवल यही वर मांगता हूं कि, इन्द्र मेरे वशमें होय–इसपर प्रसन्न होकर अनेक वर दिये और कहा कि, तुम महालक्ष्मीकी उपासना करो तुम्हारी सब इच्छा पूर्ण होगी. यह सुनकर राजा फिर तीर्थमें चला और एक प्रेतकी सहायतासे हरि-

द्वार पहुचा और वहां से गर्गमुनिके संग सब तीर्थोंमें फिरा और जब फिर हरिद्वारमें आया तब वहां महालक्ष्मीकी बडी उपासना की और देवीने प्रसन्न होकर वर दिया कि, इन्द्र तेरे वशमें होगा और तेरे वंशमें दुःखी कोई न होगा और अन्तमें तुम दोनों स्त्रीपुरुष ध्रुवताराके आसपास रहोगे और इस समय तुम कोल्हापुरमें जाओ वहां नादराजके अवतार राजा महीधरकी कन्याओंका स्वयंवर है, वहां उन कन्याओंसे व्याह करके अपना वंश चलाओ। देवीसे ये वर पाकर राजा कोल्हापुरमें गया और वहां उन कन्याओंसे धूमधामसे व्याह किया और फिरकर दिल्ली के पास के देशोंमें आया और पंजाबके सिरेसे आगरे तक अपना राज्य स्थापन किया और इन्हीं देशोंमें अपना वंश फैलाया। जब इन्द्रने राजाके वरका समाचार सुना तब तो घबडाया और उससे मित्रता करनी चाही और इस बातके हेतु नारदजीको भेजा और एक अप्सरा जिसका नाम मधुशालिनी था देकर मेल कर लिया। इसके पीछे राजा अग्रसेनने यमुनाजीके तटपर श्रीमहालक्ष्मीका बडा तप किया और श्रीलक्ष्मीजीने प्रसन्न होकर ये वर दिये कि, आजसे यह वंश

तेरे नामसे होगा और तेरे कुलकी मैं रक्षा करनेवाली और कुलदेवी हूँगी और इस कुलमें मेरा दिवालीका उत्सव सब लोग मानेंगे--यह वर देकर श्रीमहालक्ष्मी चली गई। तब राजाने आकर अपना राज्य बसाया उस राज्यकी उत्तरसीमा हिमालय पर्व्वत और पंजाबकी नदियां थीं और पूर्व और दक्षिणकी सीमा श्री गंगाजी और पश्चिमकी सीमा यमुनाजीसे लेकर मारवाड देशके पासके देश थे- इनके वंशके लोग सर्व्वदा इन्हीं देशोंमें बसे इससे मुख्य अगरवाले लोग वेही हैं जो पंजाब प्रान्तसे इधर मेरठ आगरे तकके बसनेवाले हैं। अगरवालोंके मुख्य बसनेके नगर ये हैं:- १ आगर जिसका शुद्ध नाम अग्रपुर है यह नगर राजा अग्रके पूर्व्व ददिण प्रदेशकी राजधानी था। २ दिल्ली जिसका शुद्ध नाम इन्द्रप्रस्थ है। ३ गुडगांवा जिसका शुद्ध नाम गौडग्राम है यह नगर अगरवालोंके पुरोहित गौड ब्राह्मणोंको मिला था इसीसे प्रायः अगरवाले लोग यहीं के माताको पूजते हैं। ४ मेरठ जिसका शुद्ध नाम महाराष्ट्र ❋ है। ५ रोहतक जिसका शुद्ध नाम रोहिताश्व है। ६ हांसीहिं-

---

❋ इसको कोई मयराष्ट्र भी कहते हैं।

सार जिसका शुद्ध नाम हिंसारि देश है। ७ पानीपत इसका शुद्ध नाम पुण्यपत्तन जाना जाता है। ८ करनाल। ९ कोटकांगडा जिसका शुद्ध नाम नगरकोट है। और अगरवालोंकी कुलदेवी महामायाका मंदिर यहींहै और ज्वालाजीका मंदिरभी इसी नगरकी सीमापर है। १०लाहौर इस नगरका शुद्ध नाम लवको है। ११ मंडी इसी नगरकी सीमामें रैवालसर तीर्थहै। १२ विलासपुर इसी नगरकी सीमामें नयना देवीका मन्दिर बसा है। १३ गढवाल। १४ जींदसपीदम। १५ नाभा। १६ नारनौल इसका शुद्ध नाम नारिनवल है। ये सब नगर उस राजधानीमें थे, और राजधानीका नाम अग्रनगर था जिसे अब अगरोहा कहते हैं। आगरा और अगरोहा + ये दोनों नगर राजा अग्रसेनके नामसे आजतक प्रसिद्ध हैं, राजा अग्रसेनसे अपनी राजधानीमें महालक्ष्मीका एक बडा मंदिर किया था।

राजा अग्रसेनने साढे सत्रह यज्ञ किये-इसका कारण यह है कि, जब राजाने अट्ठारहवां यज्ञ आरम्भ किया और आधा होभी चुका तब राजाको यज्ञकी हिंसासे बड़ी ग्लानि हुई और कहा कि, हमारे कुलमें यद्यपि

+ अब यह एक गांवसा बनगया है।

कहींभी कोई मांस नहीं खाता परन्तु देवी हिंसा होती है सो आजसे जो मेरे वंशमें हों उनको यह मेरी आन है कि, देवी हिंसाभी न करें अर्थात् पशुयज्ञ और बलिदानभी हमारे वंशमें न होवे और इससे राजाने उस यज्ञकोभी पूरा नहीं किया। राजाकी १७ रानी और एक उपरानी थीं उनसे एक एकको तीन तीन पुत्र और एक एक कन्या हुई और उसी साढ़े सत्रह यज्ञसे साढे सत्रह गोत्र हुए। लोग ऐसाभी कहते हैं कि किसी मनुष्यका व्याह जब गोत्रमें हो गया वो बडे लोगोंने एक ही गोत्रके दो भाग कर दिये इससे साढे सत्रह गोत्र हुए पर यह बात प्रमाणके योग्य नहीं है। राजा अग्रके उन ७२ बहत्तर पुत्र और कन्याओंके बेटा अग्रवाल कहाये अग्रवालका अर्थ अग्रके बालक हैं। अग्रवालोंके साढे सत्रह गोत्रोंके ये नाम हैं १ गर्ग २ गोइल ३ गावाल ४ बात्सिल ५ कासिल ६ सिंहल ७ मंगल ८ भद्दल ९ तिंगल १० ऐरण ११ टैरण १२ ठिंगल १३ तित्तल १४ मित्त १५ तुन्दल १६ तायल १७ गोभिल १८ और गवन अर्थात् गोइन आधा गोत्र है पर अब नामोंमें कुछ अक्षर उलट पुलटभी हो गये हैं । राजा अग्रने अपने सहायक गर्ग ऋषिके नामसे अपना प्रथम गोत्र

किया और दूसरे गोत्रोंके नामभी यज्ञोंके अनुसार रक्खे। राजा अग्रने अपने कुलपुरोहित गौड़ ब्राह्मण बनाये और इस कालमें सब अगरवाले वेद पढनेवाले और त्रिकाल साधनेवाले थे। राजा अग्र बूढा होकर तप करने चलागया- और उसका पुत्र विभु राज्यपर बैठा और उसके कई वंशतक राजा लोग अपने धर्म्ममें निष्ठ होकर राज्य करते रहे। इस वंशमें दिवाकर एक राजा हुआ जो वेदधर्म्म छोडकर जैनी होगया और उसने बहुतसे लोगोंको जैनी किया और उसी कालसे अगरवालोंसे वेदधर्म्म छूटने लगा. परंतु अगरोहा और दिल्लीके अगरवालोंने अपना धर्म नहीं छोडा । इस वंशमें राजा उग्रचन्द्रके समयसे राज्य घटने लगा और जब शहाबुद्दीनने चढाई की, तब तो अगरोहाका सब भांति नाश कर दिया। शहाबुद्दीनकी लडाईमें बहुतसे लोग मारे गये और उनकी बहुतसी स्त्रियां सती हुई जो हम लोगोंके घरमें अबतक मानी और पूजी जाती हैं। यह अगरवालोंके नाशका ठीक समय था. इसी समयसे इनमेंसे बहुतोंने धर्म छोडदिये और यज्ञोपवीत तोडडाले। उस समय जो अगरवाले भागे वे मारवाड और पूर्व्वमें जा बसे। और उनके वंश

पुरबिये और मारवाडी अगरवाले हुए और उत्तराधी और दक्खिनाधी लोगभी इसी भाँति हुए, पर मुख्य अगरवाले पछाही वेही कहलाये जो दिल्ली प्रांतमें बच-गये थे। जब मुगलोंका राज्य हुआ तब अगरवालोंकी फिर बढती हुई और अकबरने तो अगरवालोंको अपना वजीर बनाया-इसी कालसे अगरवालोंकी विशेष वृद्धि हुई-अकबरके दो मुख्य और प्रसिद्ध अगरवाले वजीर थे जिनका नाम महाराज टोडरमल*और मद्दूधूशाह था,मद्दूधूशाही पैसा इन्हीके नामसे चला है ॥

इति अग्रवालोंकी उत्पत्ति संपूर्णा ।

---

* महाराज टोडरमल खत्री थे यह बात पूज्य भारतेन्दुजीको शिवपुर द्रौपदी कुण्डके लेख देखनेसे पीछे से ज्ञात हुई. यह लेख "हरिश्चन्द्रकला" (खड्गविलास प्रेस बांकीपुर)में छपा है

राधाकृष्णदास.

२६।३।१५.

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

